सीयूजे में सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला शुरू

स्वदेश संवाददाता

रांची : झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय की ओर से सोमवार को अपशिष्ट और अपशिष्ट जल विश्लेषण में उन्नत वाद्य तकनीक विषय पर सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला 27 जून से तीन जुलाई तक चलेगा। इसका उद्घाटन विश्विद्यालय के कुलपति प्रो क्षितिज दास ने किया। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईएसएम) धनबाद - डीएसटी-स्तुति कार्यक्रम, जिसे विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित किया जाता है और पर्यावरण विज्ञान विभाग, झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित किया गया। इस अवसर पर आईएसएम धनबाद के प्रो

आलोक सिन्हा ने एसटीयूटीआई कार्यक्रम का विवरण किया और पानी एवं अपशिष्ट जल की विशेषता बारे में बताया। प्रो एसके गुप्ता ने जल संसाधनों के महत्व के साथ आईएसएम धनबाद की विस्तार गतिविधियों के बारे में बताया। पानी से संबंधित अनुसंधान के महत्व के साथ संकलित प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन स्कूल के बारे में संक्षिप्त परिचय झारखंड के एसएनआरएम केंद्रीय विश्वविद्यालय, रांची के डीन प्रोफेसर एसी पांडेय द्वारा दिया गया था। इसके बाद जल विश्लेषण के लिए यंत्रीकरण तकनीकों और वर्तमान कार्यशाला के लाभों की अधिक जानकारी प्रो आरके डे, आईक्यूएसी के निदेशक ने दी। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) द्वारा आयोजित कार्यक्रम का उद्देश्य वैज्ञानिक और तकनीकी अवसंरचना का उपयोग करने वाले सिनर्जिस्टिक प्रशिक्षण कार्यक्रम (एसटीयूटीआई) के बैनर तले देश भर में खुली पहुंच विज्ञान, प्रौद्योगिकी बुनियादी ढांचे के माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों की व्यवस्था करके मानव संसाधन और ज्ञान क्षमता का निर्माण करना है। कार्यक्रम में डॉ निर्मली बोरदोलोई, डॉ भास्कर सिंह, डॉ कुलदीप बौद्ध आदि मौजूद थे।

छात्रों ने किया आरयू के कुलपति का स्वागत

जासं, रांची : झारखंड छात्र मोर्चा के प्रतिनिधिमंडल ने रांची यूनिवर्सि
अजीत कुमार सिन्हा को शाल ओढ़ाकर और बुके देकर उनका स्वाग
बधाई स्वीकार कर छात्र मोर्चा के पदाधिकारियों व सदस्यों का आभा

अब अशुद्ध जल से लोगों को मिलेगी राहत, वाटर सैंपलिंग कर तैयार होगा डाटाबेस

सीयूजे और आइआइटी-आइएसएम धनबाद के सहयोग से जल प्रबंधन पर हो रहा कार्य

कुमार गौरव • रांची

सेंट्रल यूनिवर्सिटी आफ झारखंड रांची और आइआइटी-आइएसएम धनबाद के सहयोग से जल प्रबंधन की दिशा में कार्य किया जा रहा है। इस कार्य में न सिर्फ जल प्रबंधन के गुर बताए जा रहे हैं बल्कि यह भी तय किया जा रहा है कि जल में प्रदूषित तत्व की मात्रा कितनी है। 70 लाख की लागत से चार उपकरण सीयूजे मंगाए गए हैं। जहां राज्य भर से वाटर सैंपल की जांच अब संभव हो पाएगी। इसके लिए तय मानक के अनुसार कार्य भी शुरू कर दिया गया है। हालांकि चार उपकरणों में आटोमेटेड वेदर स्टेशन का निर्माण कार्य बाकी है। जबकि एटोमिक एबजार्पशन स्पेक्ट्रोफोटोमीटर, माइक्रोस्कोप और पाली हाउस

सीयूजे का फाइल फोटो

मिक्स्ड चैंबर की खरीदारी कर ली गई है। सूत्रों की माने तो आटोमेटेड वेदर स्टेशन का निर्माण कार्य भी एकाध माह में पूरा हो जाएगा। दरअसल, सीयूजे में शोधार्थी पिछले कई माह से जल प्रबंधन व जल संरक्षण की दिशा में कार्यरत हैं और इसे लेकर खुद कुलपति प्रो क्षिति भूषण दास ने भी गंभीरता दिखाई है।

- **सीयूजे के विज्ञानी डा भास्कर ने बताया कि उपकरणों की मदद से अब वाटर सैंपलिंग आसान होगी**
- **कहां कितने घातक तत्व पानी में घुले हैं, उसकी भी जानकारी अब आमजनों को मिल पाएगी**
- **झारखंड और ओड़िसा के 30 प्रतिभागियों को जल प्रबंधन और संरक्षण की ट्रेनिंग भी दी जा रही है**

फिलहाल यहां झारखंड व ओड़िसा के 30 प्रतिभागियों को जल प्रबंधन व संरक्षण की ट्रेनिंग भी दी जा रही है। सीयूजे के विज्ञानी डा भास्कर ने बताया कि उपकरणों की मदद से अब वाटर सैंपलिंग जहां आसान होगी वहीं कहां कितने घातक तत्व पानी में घुले हैं, उसकी भी जानकारी अब आमजनों को मिल पाएगी।

जल जनित बीमारियों से भी मिलगी राहत

आइआइटी-आइएसएम धनबाद और सीयूजे विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), भारत सरकार के सहयोग से शोध कार्य चल रहा है। जल जनित बीमारियों से अब ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को राहत मिलेगी। डा भास्कर ने बताया कि अब तक ऐसी तकनीक व उपकरण राज्य के एकाध संस्थानों तक ही सीमित है। सीयूजे में इन तकनीक व उपकरणों से कई कार्य लिए जाएंगे। पहले चरण में वाटर सैंपलिंग का कार्य किया जाएगा। इसके बाद एक डाटा तैयार कर यह बताने का प्रयास किया जाएगा कि किस एरिया में जल में कितने घातक तत्व मिले हैं।

सीयूजे में अपशिष्ट जल उपचार पर प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न

रांची, प्रमुख संवाददाता। केंद्रीय विश्वविद्यालय झारखंड के पर्यावरण विज्ञान विभाग की ओर से आयोजित जल और अपशिष्ट जल उपचार में उन्नत वाद्य तकनीक पर सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम रविवार को संपन्न हुआ। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), भारत सरकार ने इस कार्यक्रम को वित्त पोषित किया था।

समापन सत्र में कुलपति प्रो क्षिति भूषण दास, ने प्रतिभागियों को बधाई दी। सभी प्रतिभागियों को भागीदारी का प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। व्याख्यान देने वाले सभी संसाधनसेवियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

प्रतिभागियों में वैज्ञानिक, शिक्षक, इंजीनियर, अनुसंधान विद्वान और स्नातकोत्तर के छात्र, शामिल थे। आईआईटी (आईएसएम), सीएसआईआर-केंद्रीय खनन और ईंधन अनुसंधान संस्थान धनबाद, एएन कॉलेज पटना, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय पटना, दुर्गापुर गवर्नमेंट कॉलेज, काजी नजरूल विश्वविद्यालय पश्चिम बंगाल, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान दुर्गापुर, राष्ट्रीय उन्नत विनिर्माण प्रौद्योगिकी संस्थान, पीके रॉय मेमोरियल कॉलेज धनबाद, आदि विभिन्न संस्थानों से आए प्रतिभागियों की इसमें भागीदारी रही।